

## अध्याय - 3

### लेखन (वर्तनी)

लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान दें :

हिन्दी की ध्वनियाँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। इन्हें लिखने का एक विशेष तरीका है। इन लिपियों को बाएँ से दाहिने तथा ऊपर से नीचे लिखा जाता है। लिपियों को लिखते समय निम्न कुछ बातों पर ध्यान रखना चाहिए :

1. खड़ी रेखा सीधी होती है और ऊपर से नीचे आती है।
2. खड़ी रेखा बड़ी और मात्राएँ छोटी होती हैं। मात्राएँ खड़ी रेखा से ऊँचाई में कभी भी बड़ी नहीं होनी चाहिए। मात्राएँ खड़ी रेखा की आधी ही होनी चाहिए।
3. शिरोरेखा बाएँ से दाहिने की ओर जाती है और एक शब्द के सभी वर्णों को जोड़ती है। किन्तु जिन शब्दों में 'अ, आ, थ, ध, भ, श्र, क्ष और : (विसर्ग) का प्रयोग होता है, वहाँ शिरोरेखा खंडित होती है।
4. वर्ण को बनानेवाले गोल या अर्द्धगोल का आकार खड़ी रेखा का आधा या उससे कम ही हो सकता है। इस अर्द्धगोल को खड़ी रेखा के मध्य में ही जोड़ा जाना चाहिए।
5. दो शब्दों की दूरी खड़ी रेखा की ऊँचाई के बराबर होनी चाहिए।

#### ● कारक चिह्न लेखन -

कारक चिन्हों को सर्वनाम शब्दों के साथ सटाकर और अन्य शब्दों से हटाकर लिखा जाता है ; जैसे - मैंने, उसको, राम ने, नदी में।

#### ● हल् चिह्न लेखन -

शब्दान्त में 'अ' का लोप हिन्दी की प्रवृत्ति है। हिन्दी में शब्द के अन्त में 'हल्' चिह्न नहीं दिया जाता लेकिन संस्कृत के जो शब्द मूलतः हल् चिह्न युक्त हैं, उनमें यह चिह्न लगाना अनिवार्य है; जैसे - भविष्यत्, पृथक्, विधिवत्, सत्, जगत्, प्राक् आदि।

● ड, ढ - ङ, ढ का लेखन -

निम्न स्थितियों में ड, ढ का प्रयोग होता है -

- (i) शब्द के आरंभ में, जैसे - डाली, डमरू, ढोल, ढक्कन ।
- (ii) संयुक्ताक्षर में, जैसे - लड्डू, उड्डयन, बुड्ढा ।
- (iii) उपसर्ग के बाद, जैसे - सुडौल, बेढंगा, निढाल ।
- (iv) अंग्रेजी से आए शब्दों में, जैसे - रेडियो, पैड ।

निम्न स्थितियों में ङ ढ का प्रयोग होता है -

- (i) शब्द के मध्य में, जैसे - पड़ताल, छोड़ना, कढ़ी, बढ़ना ।
- (ii) शब्द के अन्त में, जैसे - जड़, रगड़, बाढ़, अनपढ़ ।

● 'र' का लेखन -

'र' के चार रूप हैं - र, ऽ, ऌ, ॠ

- (i) 'र' के पूर्व कोई व्यंजन न हो तो 'र' पूरा लिखा जाता है ।  
जैसे - रज, सरस, सार
- (ii) 'र' के पूर्व पाईवाला व्यंजन हो तो 'र' का ऽ रूप लिखा जाता है ।  
जैसे - क्र, ग्र, प्र, ब्र, स्र ।।
- (iii) 'र' के पूर्व 'श' हो तो उसका रूप - श्र हाता है ।
- (iv) 'र' के पूर्व बिना पाईवाला व्यंजन हो तो 'र' का ॠ रूप लिखा जाता है ।  
जैसे - छ्र, ट्र, ड्र ।
- (v) 'र' के बाद कोई व्यंजन हो तो 'र' का ऌ रूप लिखा जाता है ।  
जैसे - कोणार्क, आर्य, अर्थात्, स्वर्ग ।

● ई/यी, ए/ये का लेखन -

कुछ शब्दों के दो रूप मिलते हैं । जैसे -

नयी - नई, गये - गए, खाये - खाए, कीजिये - कीजिए, दिये - दिए आदि ।

ध्यान दीजिए कि यहाँ कभी 'य' (श्रुति) का प्रयोग हुआ है और कभी नहीं हुआ है। 'नयी' में 'य' है, 'नई' में केवल स्वर ध्वनि है। आजकल स्वरात्मक यानी ई/ए रूप ही प्रयोग में आते हैं। हमें इसे अपनाना चाहिए।

यह भी ध्यान दीजिए कि कुछ शब्दों के मूल अंश के रूप में 'य' प्रयुक्त होता है। जैसे – स्थायी, दायित्व, अव्ययीभाव आदि। ऐसे स्थानों में 'य' रहता है।

याद रहे कि गया का गआ, दिया का दिआ रूप नहीं होते।

#### ● 'स्क' - 'ष्क' का लेखन –

तत्सम शब्दों में अ और आ के बाद 'स्क' तथा अन्य स्वरों के बाद 'ष्क' लिखे जाते हैं। जैसे –

पुरस्कार, यास्क, भास्कर, अयस्कान्त

परिष्कार, कनिष्क, निष्कर, पुष्कर

#### ● वाला –

संज्ञा के साथ योजक प्रत्यय के रूप में आते समय 'वाला' को मिलाकर लिखा जाता है ; जैसे – टोपीवाला, गाँववाला।

क्रिया के साथ 'वाला' अलग से लिखा जाता है ; जैसे – खाने वाला, पढ़ने वाला, जाने वाला।

'वाला' निर्देशक के रूप में आते समय अलग लिखा जाता है; जैसे – गाँव वाला मकान, कल वाली बात, पहले वाला गायक।

#### ● स्वन लाघव –

जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनो का संयोग होता है, वहाँ हिन्दी में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो जाता है।

जैसे – अर्द्ध - अर्ध,

कर्त्ता - कर्ता,

परिवर्त्तन - परिवर्तन

परिवर्द्धन - परिवर्धन।



## अध्याय - 4

### शब्द विचार

हिन्दी में शब्द का निर्माण कई तरह से होता है। इनमें मुख्य साधन हैं – उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि, समास और आवृत्ति। इसी प्रकार संज्ञा शब्द से विशेषण, विशेषण से संज्ञा, क्रिया से क्रियार्थक संज्ञा, धातु से संज्ञा और विशेषण की रचना भी संभव होती है। आगे इन पर विचार किया जा रहा है।

सार्थक ध्वनियों या ध्वनिसमूह को 'शब्द' कहते हैं। स्रोत के आधार पर हिन्दी का शब्द भण्डार चार प्रकार के शब्दों से भरा है – (i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज (iv) विदेशी।

- (i) **तत्सम शब्द** : 'तत्सम' का अर्थ है उसके समान अर्थात् संस्कृत के समान। संस्कृत के जो शब्द हिन्दी में ज्यों-वे-त्यों प्रयुक्त होते हैं, उन्हें, 'तत्सम शब्द' कहा जाता है। जैसे – अंधकार, अग्नि, अर्द्ध, अष्ट, अश्रु, आश्चर्य, उज्ज्वल, एकत्र, ओष्ठ, कर्ण, काष्ठ, कूप, क्षेत्र, ग्राम, चूर्ण, जिह्वा, ज्येष्ठ, दन्त, दुग्ध, मयूर, रात्रि, वायु, व्याघ्र, सर्प, हस्त आदि।
- (ii) **तद्भव शब्द** : 'तत्' और 'भव' के योग से 'तद्भव' बना है। अर्थात् उससे यानी संस्कृत से उत्पन्न। संस्कृत के जो शब्द पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं से होते हुए कुछ परिवर्तनों के साथ हिन्दी में आए हैं, उन्हें 'तद्भव शब्द' कहते हैं। जैसे – अंधेरा, आग, आधा, आठ, आँसू, अचरज, उजला, इकट्ठा, ओंठ, कान, काठ, कुआँ, खेत, गाँव, चूरा, जीभ, जेठ, दाँत, दूध, मोर, रात, बयार, बाघ, साँप, हाथ आदि।
- (iii) **देशज शब्द** : अपने देश के ग्रामीण क्षेत्रों और जनजातियों में व्यवहृत शब्द देशज कहलाते हैं। इनमें आदिवासी भाषाओं, द्रविड़ भाषाओं तथा हिन्दी के अपने ढंग से बनाए गए शब्द होते हैं; जैसे –
  - (क) कोल, संथाल आदि भाषाओं से आर्य शब्द – कदली (केला), कपास, कोड़ी, गज (हाथी), टींडा, तोरी, ताम्बूल, परबल, बाजरा, भिंडी, मिर्च, सरसों।

- (ख) द्रविड़ भाषाओं से आए शब्द – ऊखल, कज्जल (काजल), काच, कुटी, कुंड, कुदाल, केतकी, कोण, घुण, चिकना, चंदन, चूड़ी, ताला, दंड, नीर, पिंड, बल, माला, मीन, मुकुट, शव ।
- (ग) हिंदी के अपने बनाए गए शब्द – अंडबंड, ऊटपटांग, कड़क, किलकारी, खचाखच, खटपट, खर्चाटा, खलबली, गड़गड़ाहट, चटपटा, चाट, चिड़चिड़ा, चुटकी, छिछला, झंकार, टुच्चा, धमक, पटाखा, पापड़, भभक, भोंपू, मुस्टंडा, कटकटाना, खटखटाना, खुरचना, घुड़कना, सनसनाना, हिनहिनाना ।
- (iv) विदेशी शब्द : ये बाहर के देश की भाषाओं के शब्द हैं । ऐसे शब्द विशेष रूप से अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी भाषाओं से हिन्दी में आए हैं । जैसे –
- (क) अरबी शब्द – अल्लाह, अदालत, इम्तिहान, इरादा, ईद, औरत, किताब, जिला, तहसील, तारीख, बुनियाद, मजहब, मुकदमा, साफ, सिफारिश हलवाई ।
- (ख) फारसी शब्द – अगर, आराम, आफत, आमदनी, आवारा, आसमान, आईना, कारीगर, कुरता, खुश, गंदा, गवाह, चालाक, जलेबी, जुलाहा, जुकाम, तेज़, दफ्तर, दर्ज़ी, बरामदा, बुखार, बुलबुल, बेकार, मकान, मज़दूरी मुश्किल, मेहनत, समोसा, साल ।
- (ग) तुर्की शब्द – उर्दू, काबू, कूच, कुली, कैची, खंजर, गलीचा, चाकू, चेचक, चम्मच, तोप, दरोगा, बहादुर, बारूद, बेगम, लाश, सराय ।
- (घ) पुर्तगाली शब्द – अनायास, आलमारी, आलपीन, कोको, कमीज, गमला, गोभी, गिरजा, चाभी, तौलिया, नीलाम, पपीता, पावरोटी, पेड़ा, पादरी, फालतू, बाल्टी, मेज ।
- (ङ) अंग्रेजी शब्द – अपील, अस्पताल, ऑफीसर, ऑपरेशन, इंजन, कप, कलक्टर, कॉपी, कॉलेज, केक, कोट, कोर्ट, चाकलेट, जग, जज, जंपर, टैक्स, टॉफी, टोस्ट, ट्रेन, डॉक्टर, ड्रेन, नर्स, पेन्शन, पेन, पेंसिल, पेंटर, पैंट, प्लेट, प्लेटफॉर्म, ब्लाउज, बैग, बूट, बिस्कुट, बैटरी, बस, मोटर, माचिस, मजिस्ट्रेट, लाइब्रेरी, लैंप, वोट, वार्ड, स्कूल, स्टेशन, हैट ।

● अर्थ के आधार पर शब्द –

हिन्दी का शब्द-भण्डार निम्न प्रकारों का है –

(i) अनेकार्थी शब्द (ii) समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द (iii) विलोम या विपरीतार्थक शब्द (iv) भिन्नार्थक शब्द (v) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (vi) सूक्ष्म अर्थ भेदवाले शब्द । इनके कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

(i) अनेकार्थी शब्द –

शब्द	अनेक अर्थ	शब्द	अनेक अर्थ
अंग	– अवयव, भाग	अंबर	– आकाश, कपड़ा
अक्षर	– वर्ण, ब्रह्म, नित्य	अकाल	– दुर्भिक्ष, असमय
अपेक्षा	– आशा, बनिस्बत	आम	– एक फल, सामान्य
कर	– हाथ, किरण, टैक्स	कुल	– वंश, सब
गुरु	– आचार्य / शिक्षक, भारी	गोली	– औषधि, बंदूक की गोली
जड़	– मूल, मूर्ख, अचेतन	जीवन	– जल, प्राण
दल	– मण्डली, पंखुड़ी	पक्ष	– पंख, पन्द्रह दिन, ओर
पत्र	– चिट्ठी, पत्ता	पद	– पैर, उपाधि, कविता का पद
पय	– दूध, पानी	पृष्ठ	– पीठ, पन्ना
पानी	– जल, इज्जत, चमक	भूत	– भूतकाल, प्रेत, प्राणी
वर्ण	– अक्षर, जाति, रंग	सर	– सिर, तालाब
हार	– फूलों का हार, पराजय	फल	– पेड़ का फल, नतीजा/परिणाम
हल	– खेती करने का हल, समाधान		

(ii) समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द –

शब्द	समान अर्थवाले शब्द
अग्नि	– आग, पावक, हुताशन, अनल
अंधकार	– अंधेरा, तिमिर, तम, अंधियारा
अमृत	– अमिय, सुधा, पीयूष
असुर	– दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, राक्षस
आँख	– चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन
आकाश	– अम्बर, आसमान, गगन, व्योम, नभ, अन्तरिक्ष
कपड़ा	– चीर, वसन, दुकूल, पट
कमल	– पंकज, जलज, अरविंद, कमल, पद्म, सरोज
किनारा	– कगार, तट, तीर
गर्व	– अभिमान, अहंकार, घमण्ड, दंभ
गणेश	– गजानन, गणपति, लम्बोदर, विनायक
घर	– आलय, गृह, भवन, निलय, सदन
घोड़ा	– अश्व, घोटक, तुरंग, बाजि, हय
चन्द्रमा	– इंदु, चन्द्र, चाँद, निशाकर, शशांक, शशि, सुधाकर
चतुर	– कुशल, दक्ष, निपुण, पटु, प्रवीण
जल	– अम्बु, उदक, तोय, नीर, पानी, वारि, सलिल, पय
दिन	– दिवस, दिवा, वासर
देह	– काया, तन, शरीर, वदन
ध्वजा	– केतु, पताका, झण्डा, निशान
नदी	– सरिता, तटिनी, तरंगिणी
नाव	– नौका, तरणी
पक्षी	– खग, चिड़िया, विहंग, विहग
पत्नी	– अर्धांगिनी, दारा, भार्या, सहधर्मिणी
पत्थर	– पाषाण, प्रस्तर, उपल
पवन	– मरुत, वायु, समीर, हवा

पर्वत	– गिरि, नग, पहाड़, शैल
पृथ्वी	– अवनि, धरा, धरती, भू, भूमि, वसुधा, वसुंधरा
बगीचा	– उद्यान, उपवन, वाटिका, फुलवाड़ी
बन्दर	– कपि, वानर, मर्कट
बादल	– घन, जलद, जलधर, नीरद, मेघ, पयोद, वारिद
बिजली	– चपला, तड़ित, दामिनी, सौदामिनी
भौरा	– अलि, भ्रमर, मधुकर, मधुप
मछली	– मीन, मत्स्य, झस
मनुष्य	– आदमी, इंसान, मनुज, मानव, व्यक्ति
महादेव	– त्रिलोचन, महेश्वर, शंकर, शंभु, शिव, हर
मित्र	– दोस्त, बंधु, सखा, साथी, सुहृद, स्वजन
माता	– माँ, अम्बा, जननी, धात्री
राजा	– नरपति, नरेश, नरेन्द्र, नृप, भूप, भूपाल, सम्राट
रात	– यामिनी, रजनी, रात्रि, विभावरी
वन	– अरण्य, कानन, जंगल, विपिन
विष्णु	– हरि, केशव, नारायण, चतुर्भुज
वृक्ष	– तरु, द्रुम, पादप, पेड़
शत्रु	– अरि, दुश्मन, रिपु, वैरी
संसार	– जग, जगत, भव, लोक, विश्व
समुद्र	– रत्नाकर, वारिधि, सागर, सिंधु
सर्प	– अहि, नाग, उरग, भुजंग, फणी, साँप, विषधर
स्त्री	– औरत, अबला, नारी, महिला, वनिता, वामा
सुगंध	– खुशबू, महक, सौरभ, सुरभि
सूर्य	– आदित्य, दिनकर, भानु, भास्कर, रवि, दिवाकर, अर्क
सोना	– कनक, कुन्दन, स्वर्ण, हेम
हाथी	– कुंजर, करि, गज, नाग, हस्ती, मतंग



(iii) विपरीतार्थक या विलोम शब्द -

शब्द	विलोमशब्द	शब्द	विलोमशब्द
आस्तिक	- नास्तिक	सभय	- निर्भय
इच्छा	- अनिच्छा	यश	- अपयश
कसूर	- बेकसूर	योग	- वियोग
कानून	- गैरकानून	रहम	- बेरहम
गुण	- अवगुण	रुचि	- अरुचि
चाल	- कुचाल	सत्य	- असत्य
जय	- पराजय	सम	- विषम
छल	- निश्छल	स्वस्थ	- अस्वस्थ
पक्ष	- विपक्ष	हाजिर	- गैरहाजिर
सुपात्र	- कुपात्र	हिंसा	- अहिंसा

उपसर्गों के परिवर्तन से बननेवाले विलोम शब्द :

अनुकूल	- प्रतिकूल	कडुवा	- मीठा
अपमान	- सम्मान	संयोग	- वियोग
अवनति	- उन्नति	सजीव	- निर्जीव
आदान	- प्रदान	सज्जन	- दुर्जन
खुशबू	- बदबू	सदय	- निर्दय
दुराचारी	- सदाचारी	सदाचार	- दुराचार
निरक्षर	- साक्षर	सरस	- नीरस
परतंत्र	- स्वतंत्र	सुकर्म	- कुकर्म/दुष्कर्म
विपत्ति	- संपत्ति	सुगंध	- दुर्गंध
ऊपर	- नीचे	सुमति	- कुमति
आगे	- पीछे	सुमार्ग	- कुमार्ग
अंधकार	- प्रकाश	सुलभ	- दुर्लभ
सूखा	- गीला	स्वाधीन	- पराधीन

भिन्न शब्दों के प्रयोग से बननेवाले विलोम शब्द :

अच्छाई	—	बुराई	ठण्डा	—	गर्म
अल्पायु	—	दीर्घायु	थोड़ा	—	बहुत
अन्दर	—	बाहर	दक्षिण	—	उत्तर
उत्तम	—	अधम	दरिद्र	—	धनी
उदय	—	अस्त	दुःख	—	सुख
उदार	—	अनुदार/कृपण	देव	—	दानव
ऊँचा	—	नीचा	दोष	—	गुण
एड़ी	—	चोटी	नफा	—	नुकसान
ऐच्छिक	—	अनिवार्य	नवीन	—	प्राचीन
कच्चा	—	पक्का	निकास	—	प्रवेश
कठिन	—	सरल	निर्यात	—	आयात
कठोर	—	कोमल	पाप	—	पुण्य
खरा	—	खोटा	बाढ़	—	सूखा
खराब	—	अच्छा	भावी	—	भूत
गन्दा	—	साफ	भिन्न	—	अभिन्न
गरीबी	—	अमीरी	लाभ	—	हानि
गलत	—	सही	विधि	—	निषेध
छाँह	—	धूप	सीधा	—	टेढ़ा
जंगम	—	स्थावर	हार	—	जीत
जड़	—	चेतन			

(iv) भिन्नार्थक शब्द -

प्रायः एक शब्द को थोड़े भिन्न हिज्जे में लिखने से उनमें अर्थ का अन्तर हो जाता है । ऐसे शब्दों की एक सूची नीचे दी जा रही है -

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अगम	- दुर्गम	आसन	- बैठने का आधार
आगम	- शास्त्र	आकर	- भण्डार
अचल	- पर्वत	आकार	- रूप, ढाँचा
अचला	- पृथ्वी	आदि	- बगैरह
अनल	- आग	आदी	- अभ्यस्त
अनिल	- हवा	आवास	- रहने का स्थान
अन्न	- अनाज	आभास	- झलक
अन्य	- दूसरा	इत्र	- सुगंधित द्रव
अपेक्षा	- आशा, तुलना में	इतर	- भिन्न
उपेक्षा	- निरादर	उधार	- ऋण
अमित	- बहुत	उद्धार	- छुटकारा
अमीत	- शत्रु	उन	- 'वह' का विकारी रूप
अलि	- भौंरा	ऊन	- न्यून / भेड़ के बाल
अली	- सखी	उपल	- पत्थर
अवधि	- समय	उपला	- गोबर का कण्डा
अवधी	- एक भाषा	कर्ण	- कान / त्रिभुज का कर्ण
अवलम्ब	- सहारा	करण	- साधन, एक कारक
अविलम्ब	- शीघ्र	कलि	- कलियुग
अवश	- लाचार	कली	- अधखिला फूल
अवश्य	- जरूर	कांति	- चमक
अशन	- भोजन	क्रांति	- विद्रोह, परिवर्तन

शब्द	अर्थ
कोर	– किनारा
कौर	– ग्रास
कुल	– वंश
कूल	– किनारा
कृति	– रचना
कृती	– निपुण
कृपाण	– कटार
कृपण	– कंजूस
कृष्ण	– काला / श्रीकृष्ण
कृष्णा	– द्रौपदी
कोश	– शब्दकोश
कोष	– खजाना
क्षत्र	– क्षत्रिय
छत्र	– छाता
खिल	– परती जमीन
खील	– लावा
चिता	– शव जलाने की चिता
चीता	– एक जंगली जानवर
चिर	– सदा
चीर	– कपड़ा
चुना	– चुना हुआ
चूना	– सीप से प्रयुक्त क्षार
चेन	– जंजीर
चैन	– आराम
जगत	– संसार

शब्द	अर्थ
जगत	– कुएँ का चबूतरा
जरा	– बुढ़ापा
ज़रा	– थोड़ा
जलद	– बादल
जलज	– कमल
तरंग	– लहर
तुरंग	– घोड़ा
तरणि	– सूर्य
तरणी	– नाव
तीस	– तीस की संख्या
टीस	– कसक/पीड़ा
दारु	– लकड़ी
दारू	– शराब
दिन	– दिवस
दीन	– गरीब
द्विप	– हाथी
द्वीप	– टापू (पानी के बीच)
दिया	– देना क्रिया का रूप
दीया	– दीपक
धुल	– धुलना क्रिया का रूप
धूल	– रज
नियत	– निश्चित
नीयत	– स्वभाव / इरादा
नीरज	– कमल
नीरद	– बादल

शब्द	अर्थ
निशान	— चिह्न
निसान	— झण्डा
नेति	— न इति, जिसका अंत नहीं है
नेती	— मथानी की रस्सी
परिच्छद	— पोषाक
परिच्छेद	— अध्याय
परिमाण	— मात्रा
परिणाम	— नतीजा
पवन	— वायु
पावन	— पवित्र
पानी	— जल
पाणि	— हाथ
पाश	— बंधन
पास	— नजदीक
प्रवाह	— बहाव
परवाह	— चिन्ता
प्रसाद	— कृपा
प्रासाद	— महल
प्रहार	— आघात
परिहार	— त्याग
पिता	— बाप
पीता	— 'पी' धातु / क्रिया का रूप
फुट	— नापने की इकाई

शब्द	अर्थ
फूट	— बैर, एक फल
फाका	— अनाहार
फाँका	— फाँकने की क्रिया
फलाँ	— अमुक
फलाँग	— छलाँग
बदन	— शरीर
वदन	— मुख
बन	— 'बनना' क्रिया का रूप
वन	— जंगल
बहन	— भगिनी
वहन	— ढोना
बात	— वचन
वात	— हवा
बार	— दफा
वार	— चोट, सप्ताह के वार । (सोम, मंगल आदि)
बारिश	— वर्षा
वारीश	— समुद्र
बोना	— बिखेरना
बौना	— छोटा, ठिगने कद का
भिड़	— बरें
भीड़	— समूह
मिल	— 'मिलना' क्रिया का रूप
मील	— रास्ते का नाप

शब्द	अर्थ
मेल	– मिलन
मैल	– मल, गन्दगी
मोर	– मयूर पक्षी
मौर	– मुकुट
रग	– नस
रंग	– वर्ण
राज	– शासन
राज़	– रहस्य
लक्ष	– लाख
लक्ष्य	– उद्देश्य
विश	– कमल का डण्ठल
विष	– ज़हर
विषमय	– ज़हरीला
विस्मय	– आश्चर्य
शंकर	– शिव
संकर	– मिश्रित
शील	– चरित्र
शिल	– शिला
शिवा	– शिव की पत्नी पार्वती
शीवा	– अजगर
शोक	– मन की पीड़ा
शौक	– व्यसन
शुचि	– पवित्र
सूची	– सूई, विषयक्रम

शब्द	अर्थ
शत्रु	– दुश्मन
सत्र	– वर्ष, निश्चित समय
शर	– बाण
सर	– सिर, तालाब
शस्त्र	– हथियार
शास्त्र	– सिद्धांत ग्रन्थ
शाला	– घर
साला	– पत्नी का भाई
शुल्क	– फीस, टैक्स
शुक्ल	– सफेद, उज्ज्वल
शीशा	– काँच
सीसा	– एक धातु
शुकर	– सूअर (एक जानवर)
सुकर	– आसानी से होनेवाला
सूर	– सूर्य
सुर	– देवता
समान	– बराबर, तरह
सामान	– सामग्री
सास	– पति या पत्नी की माँ
साँस	– नाक से हवा लेना-छोड़ना
सुत	– बेटा
सूत	– धागा, सारथी
सुधि	– स्मरण
सुधी	– विद्वान

शब्द	अर्थ
सुख	– आनन्द
सूखा	– अकाल
सेर	– एक तौल
सैर	– भ्रमण, घूमना
हरि	– विष्णु

शब्द	अर्थ
हरी	– हरे रंग की
हल्	– एक मात्रा
हल	– खेत जोतने का औजार
हँसी	– हँसने की क्रिया
हंसी	– मादा हंस (एक पक्षी)

**(v) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द –**

अनेक शब्दों में	एक शब्द
पहले जन्म लेनेवाला	– अग्रज
जिसके समान कोई दूसरा न हो	– अद्वितीय
जिसे टाला न जा सके	– अनिवार्य
जो पढ़ा-लिखा न हो	– अनपढ़
जिसके माता-पिता न हों	– अनाथ
पीछे / बाद में जन्म लेनेवाला	– अनुज
जिसकी उपमा न हो	– अनुपम
जो कभी नहीं मरता	– अमर
जिसका वर्णन न किया जा सके	– अवर्णनीय
जो अवश्य हो	– अवश्यम्भावी
जिसका विश्वास न किया जा सके	– अविश्वसनीय
जो ईश्वर को मानता हो	– आस्तिक
जो बाद में पाने का अधिकारी बने	– उत्तराधिकारी

जो काम से जी चुराता हो	—	कामचोर
जो किए गए उपकार को माने	—	कृतज्ञ
जो किए गए उपकार को न माने	—	कृतघ्न
गुप्त रखने योग्य	—	गोपनीय
घर से संबंधित	—	घरेलू
दूसरे की निंदा करनेवाला	—	निन्दक

(vi) ध्वनिबोधक शब्द —

(क) प्राणियों की ध्वनि के आधार पर :

प्राणी	ध्वनि	प्राणी	ध्वनि
कौआ	— काँव काँव करना	हाथी	— चिंघाड़ना
बंदर	— किकियाना	चूहा	— चूँ चूँ करना
मुर्गा	— कुकडू कूँ करना	झींगुर	— झंकारना
मोर	— कुहकना/केंकना	मेंढक	— टर् टर् करना
कोयल	— कूकना	तोता	— टें-टें करना
हंस	— कूजना	साँड़	— डकारना
भालू	— खों-खों करना	शेर	— दहाड़ना
भौरा	— गुंजारना	पपीहा	— पी-पी करना
कबूतर	— गुटर गूँ करना	साँप	— फुफकारना
बाघ	— गुरांना	ऊंट	— बलबलाना
उल्लू	— घुघुआना	कीड़े	— बिलबिलाना
चिड़िया	— चहचहाना	मक्खियाँ	— भिनभिनाना



प्राणी	ध्वनि
कुत्ता	– भौंकना
बकरी/भेड़	– मिमियाना
बिल्ली	– म्याऊँ-म्याऊँ करना
गाय	– रँभाना

प्राणी	ध्वनि
गधा	– रेंकना
घोड़ा	– हिनहिनाता
सियार	– हुआ हुआ करना

(ख) वस्तुओं की ध्वनि के आधार पर :

वस्तु	ध्वनि
दाँत	– कटकटाना
दरवाजा	– खटखटाना
पत्ता	– खड़खड़ाना
चूड़ियाँ	– खनखनाना
बादल	– गड़गड़ाना/ घुमडना/ गरजना
पायल	– छनछनाना
लकड़ी	– चटचटाना
पंख	– फड़फड़ाना

वस्तु	ध्वनि
जूते	– चरमराना
झरना	– झर-झर करना
घड़ी	– टिक् टिक् करना
बरतन	– ठनठनाना
बंदूक	– दनदनाना
दिल	– धड़कना
पीठ	– थपथपाना
हवा	– सनसनाना

(ग) दृश्य के अनुकरण के आधार पर :

बिजली	– चमकना
धूप	– चिलचिलाना
तारे	– झिलमिलाना
दीपक	– टिमटिमाना

नाव	– डगमगाना
जीभ	– लपलपाना
खेत	– लहलहाना

# अध्याय - 5

## शब्द रचना

### सन्धि

जब दो शब्द एक दूसरे के पास आ जाते हैं, तब पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि का जो मेल हो जाता है, उसे सन्धि कहते हैं। इससे एक नया शब्द बन जाता है। सन्धि तीन प्रकार की होती है – (क) स्वरसन्धि (ख) व्यंजनसन्धि (ग) विसर्ग सन्धि।

इन संधियों के बारे में नीचे कुछ जानकारियाँ दी जा रही हैं –

#### (क) स्वरसन्धि –

दो स्वरों के मेल से स्वरसन्धि होती है। ये पाँच प्रकार की होती हैं— दीर्घ, गुण, वृद्धि यण और अयादि।

#### (i) दीर्घ स्वर सन्धि :

दो सजातीय स्वर (अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ) मिलकर सजातीय दीर्घस्वर 'आ', 'ई' 'ऊ' 'ऋ' हो जाते हैं, जैसे –

#### उदाहरण

अ + अ = आ

देव + अधिदेव = देवाधिदेव

अ + आ = आ

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

आ + अ = आ

परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी

आ + आ = आ

विद्या + आलय = विद्यालय

इ + इ = ई

रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

इ + ई = ई

मुनि + ईश = मुनीश

ई + इ = ई

मही + इन्द्र = महीन्द्र

ई + ई = ई

रजनी + ईश = रजनीश

उ + उ = ऊ

गुरु + उपदेश = गुरूपदेश

उ + ऊ = ऊ

सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि

ऊ + उ = ऊ

स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय

ऋ + ऋ = ॠ

पितृ + ऋण = पितृण

## (ii) गुण स्वर सन्धि :

‘अ’या ‘आ’ के बाद इ या ई होने पर दोनों मिलकर ‘ए’; ‘उ’ या ‘ऊ’ होने पर दोनों मिलकर ‘ओ’; तथा ‘ऋ’ होने पर दोनो मिलकर ‘अर्’ हो जाते हैं; जैसे –

अ + इ = ए

देव + इन्द्र = देवेन्द्र

अ + ई = ए

सुर + ईश = सुरेश

आ + इ = ए

महा + इन्द्र = महेन्द्र

आ + ई = ए

रमा + ईश = रमेश

अ + उ = ओ

सूर्य + उदय = सूर्योदय

अ + ऊ = ओ

समुद्र + उर्मि = समुद्रोर्मि

आ + उ = ओ

गंगा + उदक = गंगोदक

आ + ऊ = ओ

गंगा + उर्मि = गंगोर्मि

अ + ऋ = अर्

देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अर्

महा + ऋषि = महर्षि

### (iii) वृद्धि स्वर सन्धि :

अ या आ के बाद ए या ऐ आने पर दोनो मिलकर 'ऐ' तथा ओ या औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं; जैसे -

अ + ए = ऐ

एक + एक = एकैक

अ + ऐ = ऐ

धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य

आ + ए = ऐ

सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ + ओ = ओ

परम + ओजस्वी = परमौजस्वी

अ + औ = औ

परम + औषध = परमौषध

आ + ओ = ओ

महा + ओजस्वी = महौजस्वी

आ + ओ = ओ

महा + औषध = महौषध

(iv) यण स्वर सन्धि :

‘इ’ या ‘ई’, ‘उ’ या ‘ऊ’ या ‘ऋ’ के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर इ या ई का ‘य’, उ या ऊ का ‘व’ तथा ‘ऋ’ का ‘र’ हो जाता है । जैसे -

इ + अ = य

यदि + अपि = यद्यपि

इ + आ = या

इति + आदि = इत्यादि

इ + उ = यु

प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

इ + ऊ = यू

नि + ऊन = न्यून

इ + ए = ये

प्रति + एक = प्रत्येक

इ + ऐ = यै

अति + ऐश्वर्य = अत्यैश्वर्य

इ + ओ = यो

दधि + ओदन = दध्योदन

इ + औ = यौ

मति + औदार्य = मत्यौदार्य

ई + अ = य

देवी + अर्पण = देव्यर्पण

ई + उ = यु

सखी + उक्ति = सख्युक्ति

ई + ऊ = यू

नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि

ई + ऐ = यै

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

उ + अ = व

अनु + अय = अन्वय

उ + आ = वा

सु + आगत = स्वागत

उ + इ = वि

अनु + इति = अन्विति